गीतिकाव्य Contd. —

(1) ऋतुसंहार — छः सर्गों वाला यह गीतिकाव्य कालिदास की प्रामाणिक कृति के रूप में स्वीकृत है। ग्रीष्म से प्रारंभ होकर बसंत तक की छः ऋतुओं का शृंगारपूर्ण वर्णन है। ऋतुओं के सर्वाङ्गपूर्ण सौम्य वर्णन पर एकमात्र काव्य होने के कारण इसका विशिष्ट महत्त्व है। वसन्त के आने पर प्रकृति सुन्दरतम छटा बिखेरती है —

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं, स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः। सुखाः प्रदोषाः दिवसाश्च रम्याः, सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते ॥ (6/2). इस काव्य की भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण है। सरलता और सहजगम्य होने के कारण मल्लिनाथ ने इसपर टीका नहीं लिखी है।

इसमें मानव और प्रकृति दोनों का चित्रण उनके उद्दीपक के रूप में हुआ है। प्रकृति की उपमा मानव से और मानव की उपमा प्रकृति से की गयी है। शरद-वर्णन के आरंभ और अन्त दोनों स्थलों पर कवि ने कामिनी का रूपक दिया है।

(2) मेघदूत — कालिदास की यह प्रसिद्ध गीतिरचना, आधुनिक समीक्षकों द्वारा गीतिकाव्य की प्रथम महत्त्वपूर्ण रचना मानी गयी है। मन्दाक्रान्ता के 115 श्लोकों में निबद्ध यह लघुकाव्य दो भागों में विभक्त है — पूर्वमेघ (63 पद्य) उत्तरमेघ (52), श्लोकों की संख्या के संबंध में मतभेद भी है।

मेघदूत का कथानक कल्पित है (कल्पित)। अलकापुरी-निवासी कोई यक्ष अपनी प्रिया के प्रति अनुराग के कारण अपने स्वामी कुबेर द्वारा एक वर्ष तक शाप का भागी बना। प्रिया-विरही यक्ष रामगिरि के विभिन्न आश्रमों में रहकर आठ महीने बिता लिए, किन्तु वर्षाकाल के आरंभ में पर्वत से क्रीड़ा करनेवाले मेघ को देखकर

Scanned with CamScanner

वह अपने को नहीं रोक सका। मेघ द्वारा ही अपनी प्रियतमा के पास अपना विरह संदेश भेजने की तैयारी में लग गया। पूर्वमेघ में वह उत्कण्ठित यक्ष मेघ का यथोचित स्वागत करे, उसे ~~रामगिरि~~ रामगिरि से अलकापुरी तक का मार्ग बतलाया जिसमें-मालप्रदेश, आम्रकूट, नर्मदा नदी, विदिशा नगरी, नीच-गिरि, निर्विन्ध्या नदी, उज्जयिनी, महाकाल-मंदिर, सिप्रा नदी, देवगिरि, चर्मण्वती नदी (चम्बलनदी), कुरुक्षेत्र, सरस्वती नदी, कनखल, गंगा नदी, हिमालय, क्रौञ्चरन्ध्र (नीति-घाटी), कैलास पर्वत और मानसरोवर का वर्णन रोचकता एवं भव्यता के साथ किया गया है।

उत्तरमेघ में अलकापुरी के वैभव का वर्णन करते हुए यक्ष ने कुबेर के राजप्रासाद के उत्तर में अवस्थित अपने घर का स्वरूप बतलाया। उस घर का प्राकृतिक वैभव को देखकर मेघ को यक्ष की प्रिया के पास पहुँचना है, जो इस समय सुन्दरी होने पर भी खिन्न, मलिन, उदास, कृश तथा तुषाराहत कमलिनी के तुल्य होगी। मेघ उसे पहचान कर ही यक्ष के विरही स्वरूप का वर्णन करते हुए संदेश देगा — 'वियोग के चार बचे हुए महीनों को वह धैर्य से बीता ले, पुनः उनका मिलना होगा।'

इसमें अचेतन मेघ के द्वारा चेतनोचित - संदेश-वाहक का कार्य लिया गया है। किन्तु इसके समर्थन के लिए यक्ष की प्रबल उत्सुकता का तर्क दिया है —

'इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गुह्यकस्तं ययाचे।
कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु॥'

(पूर्वमेघ-5)

Scanned with CamScanner